



भूमिगत नदी

नदियां सदियों से जीवन की गतिशीलता का प्रतीक रही हैं। करोड़ों लोगों के लिए नदी की परिभाषा 'जीवन रेखा' के रूप में है। हाल ही में ब्राज़ील में एक भूमिगत नदी की खोज हुई है जिसकी लंबाई लगभग 6000 किलोमीटर है। यह नदी धरती की सतह से करीब 4 किलोमीटर नीचे बहती है। इस नदी की खोज भारत में जन्मे वालिया मन्थल हमज़ा ने की है, जिनके नाम पर उनके छात्र ने इस नदी को हमज़ा नाम दिया है। हैदराबाद स्थित राष्ट्रीय भूभौतिकी अनुसंधान संस्थान में वरिष्ठ तकनीकी सहायक के रूप में अपने कैरियर की शुरुआत करने वाले डॉ. हमज़ा इस समय रिओ डी जेनिरो स्थित नेशनल आब्ज़र्वेटरी की भू-रूष्मा प्रयोगशाला के प्रमुख हैं।

हमज़ा नदी दक्षिणी अमरीका महाद्वीप की सबसे बड़ी नदी अमेज़न की तरह एंडीज़ पर्वतमाला से निकलकर अटलांटिक महासागर में मिलती है। सबसे आश्चर्य की बात तो यह है कि इस नदी का प्रवाह पथ लगभग अमेज़न के समांतर ही है। मगर जहां अमेज़न नदी की चौड़ाई एक किलोमीटर से लेकर 100 किलोमीटर तक है वहीं हमज़ा की चौड़ाई 200-400 किलोमीटर तक है। मगर अमेज़न की तुलना में हमज़ा का वेग कम है। अमेज़न का वेग है 5 मीटर प्रति सेकंड और हमज़ा का 1 मिलीमीटर प्रति सेकंड।

इससे पहले भी वैज्ञानिकों ने मेक्सिको में 153 किलोमीटर लंबी एक भूमिगत नदी का पता लगाया था। लेकिन हमज़ा की लंबाई-चौड़ाई ने समूचे विश्व का ध्यान आकर्षित किया है। वैज्ञानिक यह समझने की कोशिश कर रहे हैं कि पानी की यह अथाह राशि धरती के नीचे किस तरह उपस्थित है।

इसी तरह इंडोनेशिया से लेकर रूस के उत्तरी क्षेत्र में पृथ्वी की सतह से नीचे 700-1400 वर्ग किलोमीटर में फैले भूमिगत सागर का पता चला था। इस जलराशि के बारे में माना जाता है कि पूर्वी प्रशांत महासागरीय रिम में ज़रूर कुछ ऐसी असामान्य स्थितियां विद्यमान हैं कि वहां नमी बनी रहती है। वैज्ञानिकों के एक वर्ग का यह भी मानना है कि प्रशांत महासागर की तली पृथ्वी की जिस प्लेट पर स्थित है, वह महाद्वीपीय प्लेट के नीचे आ गई होगी और इस तरह यह भूमिगत सागर बना होगा।

हमज़ा नदी के बारे में कहा जाता है कि वहां चट्टानों से रिसकर पानी भूमि में पहुंचता होगा। इसके अलावा, अमेज़न नदी के बेसिन के उत्तरी क्षेत्र की संरचना चूने के पत्थरों वाली है, जिसके कारण भी पानी नीचे पहुंचता होगा।

असल में हमज़ा नदी के अस्तित्व का पता तब चला जब तेल के 241 निष्क्रिय कुओं में विभिन्न गहराइयों पर तापमान में असामान्य उतार-चढ़ाव देखा गया। वहीं, भूमिगत सागर

का पता 2007 में तब चला था, जब कुछ दलदली क्षेत्रों के कारण भूकंपीय तरंगों के धीमा पड़ने पर उन इलाकों की पड़ताल की गई।

वैसे तो विज्ञान ने हमें काफी पहले बता दिया था कि जमीन से अधिक जीवन महासागरों में फैला है। हम यह भी

जानते हैं कि महासागरों में भी कुछ स्थानों पर गर्म और ठंडे पानी की जलधाराएं होती हैं जिन्हें महासागरों में बहती नदियां भी कहा जाता है। इस विशाल भूमिगत नदी की खोज यह सोचने को मजबूर करती है कि प्रकृति के कितने रहस्य मानव को अभी समझना है। (स्रोत फीचर्स)

वर्ग पहेली 85 का हल

का	ला	ज़ा	र			व्य	स	न
	इ		ज	ठ	र		र	
	ला		त		ब		ग	ज
बं	ज	र		म	र	ह	म	
		फ़ता		श		रि		
	पा	र	से	क		त	रा	जू
क्षा	र		व		मा		त्रि	
	भा		न	क्ष	त्र		च	
अ	सी	म		क	ल	र	व	